डॉ. सतीश चन्द्र भगत

मेरे दादा

सुबह नहाते मेरे दादा,
मुझे जगाते मेरे दादा |

मुझको बाहर खुली हवा में,
नित टहलाते मेरे दादा |

होमवर्क पूरा करवाते,
पाठ पढ़ाते मेरे दादा |

बच्चों के संग खेलें- कूदें,
खूब हँसाते मेरे दादा |

गृह बगिया में खिलें फूल- फल,
स्वयं उगाते मेरे दादा |

पीपल- नीम वृक्ष के सम्मुख,
शीश नवाते मेरे दादा |

कोयल जैसा मीठा बोलो,
सदा सिखाते मेरे दादा |

आओ गौरैया

आँगन में आओ गौरैया,
दाना चुगकर खाओ |
डरो नहीं आओ गौरैया,
हमें छोड़ मत जाओ |

दूर- दूर तुम क्यों बैठे हो,
साथ सभी आ जाओ |
कमी नहीं दाना- पानी की,
बिल्कुल नहीं लजाओ|

हरियाली में नाच दिखाकर,
चीं- चीं चूँ- चूँ गाओ|
खिड़की से तुम झाँक- झाँककर,
सबका मन बहलाओ|

उपवन में कुछ देर ठहरकर,
ठीक तरह सुस्ताओ |
फूलों से खुशबू लेकर तुम,
फिर झटपट उड़ जाओ|

 ISSN:2583-8849